MTTP–001

बांग्ला–हिंदी अनुवाद में स्नातकोत्तर सर्टिफिकेट कार्यक्रम (पी.जी.सी.बी.एच.टी.)

अनुवाद परियोजना

(जनवरी 2018 और जुलाई 2018 सत्रों में
प्रवेश लेने वाले विद्यार्थियों के लिए)

अनुवाद अध्ययन और प्रशिक्षण विद्यापीठ
इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
मैदानगढ़ी, नई दिल्ली–110 068

अनुवाद परियोजना
(एम.टी.टी.पी.-001)

(जनवरी 2018 और जुलाई 2018 सत्रों में प्रवेश लेने वाले विद्यार्थियों के लिए)

कार्यक्रम कोड : पी.जी.सी.बी.एच.टी.

जैसा कि आपको बताया जा चुका है कि 'बांग्ला-हिंदी अनुवाद में स्नातकोत्तर सर्टिफिकेट कार्यक्रम' (पी.जी.सी.बी.एच.टी.) को पूरा करने के लिए आपको चार-चार क्रेडिट के चार पाठ्यक्रम करने होंगे। इस स्नातकोत्तर सर्टिफिकेट कार्यक्रम का चौथा पाठ्यक्रम (एम.टी.टी.पी.-001) 'अनुवाद परियोजना' का है। इस परियोजना के अंतर्गत आपको दी गई सामग्री का अनुवाद करना है। अनुवाद के लिए सामग्री संलग्न है। इसका अनुवाद करके आपको मूल्यांकन के लिए प्रस्तुत करना है। ध्यान रहे कि यह 'अनुवाद परियोजना' एक स्वतंत्र पाठ्यक्रम के समकक्ष है। इसमें उत्तीर्ण होना आवश्यक है।

परियोजना करने का तरीका

प्रस्तुत सामग्री को ध्यानपूर्वक पढ़ें। इससे आप समझ जाएँगे कि यह किस विषय से संबंधित है और इसमें प्रमुखतया क्या कहा गया है। इसके बाद आप इस सामग्री में से वे शब्द और मुहावरे आदि छाँटिए जिनका अर्थ अथवा जिनके हिंदी पर्याय आपको पता नहीं है। इन शब्दों को एक कागज़ पर नोट कर लीजिए। ध्यान दीजिए कि अनूद्य सामग्री के अनुवाद करते समय आपको कौन-कौन से कोश देखने की जरूरत है। विषय के अनुरूप समुचित कोशों में से उन शब्दों के पर्याय नोट कर लीजिए।

अब अनूद्य सामग्री को एक बार पुनः पढ़िए। गौर कीजिए कि अब की बार यह आपको ज्यादा अच्छी तरह समझ आती है कि नहीं। यदि कोई अंश समझ में न आ रहा हो तो उसे फिर से पढ़िए और पता लगाइए कि कठिनाई कहाँ है – शब्दों का अर्थ समझने में अथवा वाक्य-विन्यास को समझने में। यदि कोई वाक्य न समझ आ रहा हो तो उसे दूसरी बार, तीसरी बार पढ़िए।

इस सामग्री में प्रयुक्त संक्षिप्तियों पर ध्यान दीजिए। उनके पूर्ण रूप क्या हैं, जानने की कोशिश कीजिए। अधिकांश संक्षिप्तियों के पूर्ण रूप आपको इस सामग्री में ही मिल जाएँगे।

इस तरह अनूद्य सामग्री का अर्थ भली-भाँति समझ लेने के पश्चात उसका अनुवाद आरंभ कीजिए। अनुवाद करते समय भी शब्दकोश का भरपूर उपयोग कीजिए। जिन शब्दों के अर्थ आपको पता हैं उनके लिए भी शब्दकोश देखिए ताकि विषय और संदर्भ के अनुकूल पर्यायों का चयन कर सकें। वाक्य-विन्यास लक्ष्य भाषा (अर्थात् हिंदी/मलयालम) की प्रकृति के अनुसार कीजिए। यानी आपका बनाया वाक्य ऐसा लगे कि आप अनुवाद नहीं कर रहे बल्कि उस भाषा में मूल रूप में लिख रहे हैं। ऐसा तभी होगा जब आपकी वाक्य-रचना स्रोत में कही गई बात का अनुकरण न होकर लक्ष्य भाषा की कथन-शैली के अनुरूप और सहज होगी।

एक पैराग्राफ अथवा एक पृष्ठ का अनुवाद करने के बाद अपने अनुवाद को मूल सामग्री से मिलाइए और देखिए कि आपके अनुवाद का वही अर्थ निकल रहा है जो मूल कथन में कहा गया है। यदि अंतर दिखाई दे तो अपने अनुवाद में सुधार कीजिए। पूरी तरह आश्वस्त होने के बाद अनुवाद को आगे बढ़ाइए। अगले पैराग्राफ/पृष्ठ के अनुवाद के बाद फिर यही जाँच-प्रक्रिया दोहराइए और अनुवाद करते जाइए।

अनुवाद पूरा करने के पश्चात उसे एक बार फिर मूल सामग्री से मिलाइए और जाँच कीजिए कि आपका अनुवाद और मूल सामग्री समान अर्थ प्रकट करते हैं। यह भी जाँच कीजिए कि कहीं कोई पैराग्राफ, वाक्य अथवा वाक्यांश अनुवाद होने से छूट तो नहीं गया है। तत्पश्चात अनूदित सामग्री को साफ-साफ लिखकर हस्तलिखित रूप में लिखिए अथवा टंकण की व्यवस्था कीजिए।

अनुवाद परियोजना की प्रस्तुति

- अनुवाद परियोजना फुलस्केप आकार के कागज पर पर्याप्त हाशिया छोड़ते हुए एक तरफ टंकित कराके और बाइंडिंग कराके प्रस्तुत करें।

- अनूदित परियोजना के आरंभिक पृष्ठ पर आपके इस कार्यक्रम का शीर्षक, पाठ्यक्रम कोड और शीर्षक, नामांकन संख्या, नाम, पता, अध्ययन केंद्र का कोड लिखा होना चाहिए और अंत में आपके हस्ताक्षर एवं प्रस्तुति की तिथि का उल्लेख होना चाहिए। इस तरह, आपकी 'अनुवाद परियोजना' का आरंभिक पृष्ठ इस प्रकार होगा :

कार्यक्रम का शीर्षक : बांग्ला–हिंदी अनुवाद में स्नातकोत्तर सर्टिफिकेट (पी.जी.सी.बी.एच.टी.)

पाठ्यक्रम कोड : एन.टी.टी.पी.–001

पाठ्यक्रम का शीर्षक : अनुवाद परियोजना

सत्रीय कार्य कोड : .....

अध्ययन केंद्र का नाम: .....

नामांकन संख्या : .....

नाम : .....

पता : .....

.....

हस्ताक्षर : .....

तिथि : .....

- अनुवाद परियोजना के साथ एक प्रमाण–पत्र भी लगाएँ जिसमें आपके अपने हस्ताक्षर सहित यह प्रमाणित किया गया हो कि आपने यह अनुवाद–कार्य स्वयं किया है और इसके लिए किसी व्यक्ति की सहायता नहीं ली गई है।

- अनुवाद परियोजना विश्वविद्यालय में निम्नलिखित पते पर व्यक्तिगत रूप से अथवा पंजीकृत डाक द्वारा भेजें :

  फुलराविव
  विद्यार्थी मूल्यांकन प्रभाग (SED)
  इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त वि विद्यालय
  मैदान गढ़ी, नई दिल्ली–110068

अनुवाद परियोजना प्रस्तुत करने की अंतिम तिथि

जनवरी 2018 में प्रवेश लेने वाले विद्यार्थियों के लिए : **31 मई, 2018**
जुलाई 2018 में प्रवेश लेने वाले विद्यार्थियों के लिए : **30 नवंबर, 2018**

अंतिम तिथि के बाद भेजी गई परियोजना का मूल्यांकन विलंब से होगा और आप इस अध्ययन कार्यक्रम को देर से पूरा कर सकेंगे।

कृपया ध्यान दें :

प्रस्तुत की गई अनुवाद परियोजना की एक प्रति (फोटोकॉपी) अपने पास अवश्य रख लें।

शुभकामनाओं सहित।

अनुवाद परियोजना

(एमटीटी-001)

कुल अंक: 100

1. निम्नलिखित का हिंदी में अनुवाद कीजिए। 10 x 8=80

(क)

সব মানবশিশুই অল্পবিস্তর আক্রমণাত্মক এবং সহিংস প্রবৃত্তি নিয়ে জন্মায়, বিশেষ করে ছেলেরা। মহাত্মাজিও এর ব্যতিক্রম ছিলেন না। তাঁর ব্যতিক্রম এইখানে যে, তিনি হিংসাকে জয় করেছিলেন। কোন বলে বলীয়ান হয়ে তিনি এই জয়যাত্রায় বের হয়েছিলেন, এর জবাবে বলতে হয় যে, উত্তরটি জটিল এবং গভীর মনস্তত্ত্ব-মূলক। কিন্তু এতে সন্দেহ নেই যে, যাত্রা শুরু হয় কতকাংশে আমিষ-নিরামিষের দ্বন্দ্ব নিয়ে। গুজরাতি বনিয়াদের সমাজ কঠোরভাবে নিরামিষাশী। কিন্তু একথা অনস্বীকার্য যে, এই জৈনপ্রভাবিত সমাজেও শিশুরা সম্পূর্ণ aggresion-মুক্ত নয় এবং হতে পারে না। ছোট্ট 'মনিয়া' (মহাত্মাজির শৈশবের পারিবারিক নাম) ছিল অসম্ভব চঞ্চল এক বাচ্চা। এক মুহূর্ত কোথাও চুপ করে বসতে পারত না। তাই তার বড়দিদি তাকে নিয়ে বাড়ির বাইরের রাস্তায় বেড়াতে যেত। গোরু, মহিষ, ঘোড়া, কুকুর, বিড়াল সে রাস্তায় চড়ে বেড়াত বা ঘুরত। মনিয়া মজা পেত কুকুরকে কানমলা দিয়ে।

স্কুলে ঢোকার পর মোহনদাসের এক ডানপিটে বন্ধু হল, নাম শেখ মেহতাব। শেখজাদা বলল, লম্বা-চওড়া হতে হলে মাংস খেতে হবে, মোহনদাস নিতান্তই ছোটখাটো। তখনকার দিনে ছেলেদের মুখে মুখে একটা গুজরাতি ছড়া চলত: 'ইংরাজ রাজত্ব করে, দেশীয়ে রাখে দাবিয়া/ লম্বায় সে পুরা পাঁচ হাত, মাংসাহারী বলিয়া।' গায়ে জোর করার আগ্রহ অন্যান্য ছেলের মতো মোহনদাসেরও ছিল। সে বন্ধুর কথায় রাজি হল। মেহতাব মোহনদাসকে নিয়ে অনেক দূরে নদীর ধারের একটা বাড়িতে মাংস রান্না করে খাওয়াল। মনিয়ার মুখে রুচল না। বিলেতে ব্যারিস্টারি পাশ করতে যাওয়ার সময় গাঁধীকে দিয়ে তাঁর মা প্রতিজ্ঞা করিয়ে নিলেন, মদ্য-মাংস ছোঁবে না। ইনার টেম্পল-এর ডিনারে চারজনের টেবিলে থাকত দু'টি মদের বোতল এবং হয় গোরু নয় ভেড়ার মাংস। নিরামিষ খাবারের বায়না করায় গাঁধী খেতে পেলেন বাঁধাকপি ও আলুর ঘ্যাঁট। মদের বদলে তিনি তাঁর টেবিলের সঙ্গীদের কাছ থেকে চেয়ে নিতেন তাঁদের ফলমূলের ভাগ। ইংল্যান্ডে তখন ভেজিটেরিয়ান খাবার আন্দোলন শুরু হয়েছে, তার শামিল কোয়েকার ও অহিংসাবাদী শান্তিকামীদের দল। গাঁধী ভিড়ে গেলেন সেই দলে। ওই দলে তাঁর কয়েকজন ইংরেজের সঙ্গে বন্ধুত্ব হল। ফলে, তাঁর মনে ইংরেজদের প্রতি কোনও বিদ্বেষ রইল না। মনিয়া থেকে মহাত্মার অহিংসবাদ বিবর্তনের সম্পূর্ণ ইতিহাস এটা অবশ্যই নয়, কিন্তু একে বাদও দেওয়া যায় না। এ ছাড়া যৌনতা ও হিংসার সংশ্রব নিয়ে তাঁর যে-ধারণা জন্মেছিল, সেই মনস্তত্ত্ব এবং অন্য আরও অনেক কিছু উপাদান নিশ্চয়ই ছিল।

পরবর্তী অধ্যায়ে আমরা দেখি, দক্ষিণ আফ্রিকাতে গাঁধী সাদা জনতার হাতে কিল চড় লাথি ঘুষি খচ্চা খাদ এবং ঘোড়ার চাবুকের শিকার। একবার সাদাদের আর-একবার পাঠানদের হাতে পড়ে তাঁর প্রাণ যেতে বসেছিল। ততদিনে অহিংসার চরম মূল্য দিতে মহাত্মাজি প্রস্তুত।

সেই প্রস্তুতির পশ্চাতে তৈরি হয়ে গেছে অহিংসার আদর্শ নির্ণয়। ১৯০৮ খ্রিস্টাব্দে তিনি বন্ধুদের বললেন: 'আমরা এতই ভাবনারহিত যে, বলে বসি, সাদাদের মধ্যে ভাল কিছু নেই। এটা স্পষ্টতই ভুল। মানবজাতি এক, এবং

যদিও অল্পসংখ্যক মানুষ ভুলবশত ভাবে যে, তারা আমাদের থেকে আলাদা, আমরা নিজেরাও যেন কিছুতেই তাদের অনুসরণ করে সেই ভুল না করি ।' আশ্চর্য এই নয় যে, মহাত্মাজি এই আদর্শের রূপায়ণে সক্ষম হন। আশ্চর্য এই যে, প্রায় সকল প্রবাসী ভারতীয়ই দক্ষিণ আফ্রিকায় তাঁকে সমর্থন করেছিল।

রামচন্দ্র গুহর পেশ করা একটি খবর থেকে আমরা জানতে পারি যে, ১৯০৭ থেকে ১৯১০-এর মধ্যে ট্রান্সভাল-এ বসবাসকারী ভারতীয়দের মধ্যে ৩৫ শতাংশ জেলে গিয়েছিল। লেখক যথার্থই বলেছেন, এই শতাংশ একটা আশ্চর্য গণসমর্থনের ইঙ্গিতবাহী। কারণ, যেসব আন্দোলনকারী জেলে যায়নি, তাদের সংখ্যা জেলবাসীদের চেয়ে অনেক, অনেক বেশি। এর সঙ্গে আর-একটি গুরুত্বপূর্ণ সত্যও লেখক যোগ করেছেন। এই গণসমর্থন ছিল সম্প্রদায় নিরপেক্ষ । হিন্দু এবং মুসলমান, গুজরাতি এবং তামিল, দক্ষিণ আফ্রিকার সকল ভারতীয় জাতিবর্ণ নির্বিশেষে মহাত্মাজির সত্যাগ্রহের শামিল ছিল।

(খ)

বাইশ বছরের এক সদ্য-যুবক প্রিন্সটন বিশ্ববিদ্যালয়ে পড়াশোনা করতে আসার কয়েক মাসের ভেতর লিখে ফেলে একটা গাণিতিক নিবন্ধ। অবিলম্বে সেটা প্রকাশিত হয় আমেরিকার অন্যতম বিজ্ঞান পত্রিকা প্রোসিডিংস অফ ন্যাশনাল অ্যাকাডেমি অফ সায়েন্স-এ। মাত্র পাতাখানেক দৈর্ঘ্যের সেই নিবন্ধটি প্রায় তিন দশক অনাদরে পড়ে থাকার পর যখন ফের উঠে এল জনসমক্ষে, ধরা পড়ল, তার প্রয়োগক্ষেত্র শিল্পবাণিজ্য, সমরশাস্ত্র থেকে জীববিজ্ঞান সর্বত্র। সেই গবেষণার জন্য ১৯৯৪ সালে, ৬৬ বছর বয়সে অর্থনীতিতে নোবেল স্মারক পুরস্কার পেলেন তিনি, আরও দু'জনের সঙ্গে (জন হারসেনায়ি এবং রাইনহার্ড সেলটেন)।

আখ্যানের জোর প্রবল, কখনও কখনও সভ্যকেও ভা ছাপিয়ে যায়। সাধারণ মানুষ জন ফোর্বস্ ন্যাশকে চিনেছেন যে চলচ্চিত্রের ভেতর দিয়ে, 'আ বিউটিফুল মাইন্ড', সত্য থেকে তা যে নানা জায়গায় বিচ্যুত সে কথা জন ন্যাশ নিজেই জানিয়ে গেছেন অনেকবার। ওই চলচ্চিত্রে তাঁর মানসিক বিপর্যয়ের চিত্রটাও নয় যথাযথ। যে-মানসিক বৈকল্য তাঁর জীবনের অনেকগুলো দশক কেড়ে নিয়েছিল সেটা শুরু হবার আগেই তিনি তাঁর স্মরণীয় কাজগুলো সেরে ফেলেছিলেন।

জন্ম ১৩ জুন, ১৯২৮, আমেরিকার ওয়েস্ট ভার্জিনিয়া রাজ্যে। যেখানে বড় হয়েছেন সেখানে প্রতিভাধর ছাত্রদের বেড়ে ওঠার মতো খোরাক ছিল না । কিন্তু তাঁর গাণিতিক প্রতিভার দিকটা তাঁর বাবা-মা সম্ভবত ঠিকই দেখতে পেয়েছিলেন, তাই গণিত নিয়ে তাঁকে বিশেষ প্রশিক্ষণ নিতে পাঠান তাঁরা। কেমিস্ট্রি ইত্যাদি অন্যান্য বিষয় পড়তে পড়তেই তিনি কিছুদিন কার্নেগি ইনস্টিটিউট অফ টেকনোলজিতে গণিতচর্চা করতে থাকেন। পরে যখন প্রিন্সটন বিশ্ববিদ্যালয়ে আসেন গণিতকেই মুখ্য অধ্যয়নের বিষয় হিসেবে নিয়ে, কার্নেগি ইনস্টিটিউট অফ টেকনোলজির এক অধ্যাপক মাত্র একটা বাক্যে লিখেছিলেন তাঁর সুপারিশে: 'দিস ম্যান ইজ আ জিনিয়াস'।

সাধারণভাবে ন্যাশ-এর অধিক পরিচিত কাজটি গেম থিওরি নামে খ্যাত। প্রিন্সটনে মাত্র ২৭ পৃষ্ঠার যে-থিসিসটি তিনি জমা দেন ডক্টরেট করার সময়, সেটিও ছিল এই গেম থিওরি বিষয়েই। কিন্তু ব্যাপারটা কী? গেম, যা খেলা নিয়ে অঙ্ক? এর সূত্রপাত অবশ্য ন্যাশ-এর হাতে নয়, আর-এক প্রবাদপ্রতিম গণিতজ্ঞ, আধুনিক কম্পিউটারের প্রধান স্থপতি জন ভন নয়মান এবং এক অর্থনীতিবিদ অস্কার মর্গেনস্টার্ন প্রথম এ নিয়ে কিছু ভাবনা শুরু করেন। এ বিষয়ে তাঁদের নিবন্ধ বেরয় ১৯৪৪ সালে । কিন্তু ন্যাশ তাঁদের ওই ভাবনাটাকে আরও সাধারণ এবং বাস্তবঘেঁষা করে তুললেন।

খেলায় প্রতিপক্ষ থাকে, থাকে ব্যবসাতেও। একজন খেলোয়াড় কী চাল দেবে তা না জেনেই অপরজনকে তার চাল দিতে হয়। ন্যাশ সাজালেন এমন পরিস্থিতি যেখানে প্রতিপক্ষরা পরস্পরের সঙ্গে ভাববিনিময় করতে অক্ষম/নারাজ।

তিনি খুঁজলেন, 'খেলা'য় এমন কোনও পরিণতি থাকা কি সম্ভব যে, সেভাবেই খেলা এগোক, তা ওই দশাতেই পৌঁছবে? পূর্ণ গাণিতিক তত্ত্বটি জটিল। একটা সরল উদাহরণের সাহায্যে ব্যাপারটাকে বোঝানো হয়। দুই বিচারাধীন অপরাধী, যারা একজোটে অপরাধ করেছে বলে অভিযোগ আছে, তাদের প্রত্যেককে আলাদা করে ডেকে বলা হল, যদি দু'জনেই অপরাধের কথা পরিষ্কার খুলে বলো, তোমাদের সাজা হবে মাত্র দু'বছরের। আর যদি তুমি নিজে যোগসাজসের কথা ফাঁস করে দাও, অপরজন তা না করে তাহলে তুমি নিঃশর্তে মুক্তি পাবে, অপরজনের হবে দশ বছরের সাজা। এদিকে অপরাধীরা জানে, তারা কেউ-ই যদি মুখ না খোলে তাহলে পুলিশের হাতে যে প্রমাণ আছে তাতে একবছরের বেশি সাজা তাদের কারওরই হয় না। তাহলে তারা কোন পন্থা নেবে?

(গ)

বলতে বলতেই সে তর্জনী দিয়ে কলুর দিকে নির্দেশ করল। তার সঙ্গে খলখল করে কী ভয়াবহ হাসি! কলুর তৎক্ষণাৎ গায়ের রক্ত হিম হয়ে গেছে। সে আর কোনও দিকে না তাকিয়ে ছুটেছিল নিজের বাড়ির দিকে। ফিরে এসে এক কলসি জল খেয়ে বিছানার ওপর চিত হয়ে শুয়ে পড়েছে! সেঁ যে জঙ্গলের কারবারি, তা মালালডালাল জানল কী করে! তবে কি তার কুকীর্তির হিসেব ভগবানের সঙ্গে সঙ্গে এ দেশের দানবও রাখছে?

এ ছিল গতকালের ঘটনা। আর আজ সকালে এই কাণ্ড! দরজার সামনে একগাদা অদ্ভুত জিনিস। কলু ভেবে পায় না কী করবে! এ দেশ তাকে আপন করে নেবে না! আবার ছেড়েও দেবে না। অন্যায় কি একা সে করে? আর এমন কী অন্যায় করেছে কলু যে, সকলকে ছেড়ে মালালডালালের দৃষ্টি তার ওপরেই পড়বে! অন্যায় বলতে তো একমাত্র মণিরাম তামাংকে চোরাই কাঠ সরবরাহ করা। অল্পবয়স থেকেই তো এই বৃত্তি নিয়ে আজ এতখানি বড় হয়েছে কলু! অনেক পয়সা করেছে। সে অর্থ দেখলে গরিব মানুষদের চোখ টাটায়। বলে, 'দিকুর গাদের রক্ত ডালপালা ছড়ায়েছে। সাঁচা মুড়ার খুন নাই কলুর গায়ে থাকলি বেইমালি করে না। ওরে ওর মা ধরতি না ধরায়ে তিস্তার জলে ভাসায়ে দিলে ভাল করত রে।'

না, সাঁচা মুন্ডার খুন নেই! কলু আজন্ম এই কথা শুনে আসছে। জন্ম থেকেই তার এই বিড়ম্বনার সূত্রপাত। কলুর ধারণা, তার জন্মটাই আসলে বিড়ম্বনা! কিন্তু তাতে তো তার কোনও হাত নেই! জন্মদাত্রী যে মা, তার কাছ থেকেও তো সেই একই কথা শুনেছে সে। তার দোষ একটাই, সে দিকুদের সন্তান। দিকুরা তার মাকে জোর করে তুলে নিয়ে গিয়েছিল ফুর্তি করার জন্য! আর সেই ফুর্তির ফলাফল হিসেবে জন্ম নিল কলু। সে যখন শিশু, তখন প্রায়ই মায়ের কাছে গিয়ে কোলে চড়তে চাইত। মা কখনও কোলে নেয়নি ফুঁসে উঠে বলত, 'তু মোর বেটা না! তুই কত্তুগুলান রাক্ষসের বেটা! আমি তোর কেও না!

(ঘ)

গল্পটা আসলে ছিল প্রেমের, কিন্তু এখন হয়ে গেছে লড়াইয়ের। আর সেই লড়াইটাও যে রিংয়ের মধ্যে সীমাবদ্ধ নয় সেটা বোঝে মহী।

বিকেলের সময়টায় পীরবাবার পুকুরের দিক থেকে একটা ঠান্ডা হাওয়া দেয়। পাশের বড় অশ্বত্থ গাছ নিজের ঝাঁকড়া মাথাটা অল্প অল্প নাড়ে। হাওয়ায় ঝিরঝির শব্দ তুলোর মতো ভেসে বেড়ায় চারিদিকে।

মহী মাথা তুলে দেখল। বড় জলট্যাঙ্কিটা দেখা যাচ্ছে। ওদের মফস্সলের সব বাড়ির জল এখান থেকে সাপ্লাই করা হয়। ট্যাঙ্কের মাথায় উঠে যাওয়া জং-ধরা প্যাঁচানো লোহার সিঁড়িটা দেখা যাচ্ছে। ট্যাঙ্কের পাশেই পাম্প ঘর। বাচ্চুদা পাম্প অপারেটর। ওখানেই থাকে। ছোটবেলায় মহীরা সবাই মিলে বাচ্চুদার ঘরে গিয়ে হামলা চালাত।

তারপর ওই সিঁড়ি বেয়ে উঠে যেত উঁচু জলের ট্যাঙ্কটার কাছে। ট্যাঙ্কের তলার খোপের বেশ কিছু বুনো টিয়া পাখি থাকত। মহীর ইচ্ছে হত ওখান থেকে একটা-দুটো ধরে নিয়ে গিয়ে বাড়িতে পুষবে।

তবে টিয়া ধরার চেয়ে অত ওপর থেকে ওদের ছোট্ট মফস্সলটা দেখাই যেন ওর আসল উদ্দেশ্য ছিল। মহীর মনে হত এই উঁচু ট্যাঙ্কটা যেন ওদের মফস্সলের মাস্তুল!

এমনই একদিন সিঁড়ি বেয়ে ওপরে উঠে এদিক ওদিকে দেখতে গিয়েই বদলে গিয়েছিল ওর জীবনটা। খেলাধুলো আর হইচই-এর গল্পটা পালটে গিয়েছিল প্রেমের গল্পে!

কোন ক্লাস তখন মহীর? টেন হবে। গরমের ছুটির সেই দুপুরে ওদের নির্জন মফস্সলের মাস্তুলে উঠে এদিক ওদিক তাকাতে তাকাতে ও দেখে ফেলেছিল তাকে।

কত বছর হল? চোদ্দো? রামচন্দ্র বনবাস সেরে ফিরে এলেন বাড়ি? তবু ও তো ফিরতে পারল না!

মহী ট্যাঙ্কের মাথার নিকটায় তাকাল। কয়েকটা টিয়া উড়ছে। সবুজ পাতা-কুচির মতো লাগছে ওদের। পুজো আসছে। চারিদিকে যেন বিয়ে বাড়ির ব্যস্ততা! তার মধ্যে ওর নিজেকে কেমন বেমানান লাগে!

ওদের মফস্সলেও একটা বড় মার্কেট হয়েছে। লোকে বলে শপিং মল। সবাই কত কিছু যে কিনছে! মনে হচ্ছে যেন শিগগির যুদ্ধ লাগবে। তাই নীর্ঘ কারফিউ-এর আগে যে যার মতো রসদ সংগ্রহ করে নেওয়ার এই শেষ সুযোগ।

আজও মা আলতো করে বলেছে ভাইটার জামা কেনার কথা। মহী তেমন কিছু উত্তর করতে পারেনি। যদি পতাদা আজ মাইনেটা দেয় আর যদি টিউশনির তিনটে বাড়ি থেকে সন্ধেবেলা টাকাগুলো পায় তবে কাল ভাইকে কিছু কিনে দেবে!

ভাইটা খুব ভাল। নাইন-এ পড়ে। কখনও কিছু চায় না। পুজোতেও নাকি অস্থায়ী দোকানগুলোয় ওয়েটারের একটা কাজ দেখছে।

মহীর চোখে জল চলে এল। একটা চাকরিও পাচ্ছে না! এত চেষ্টা করেও না! প্রতি সপ্তাহে কলকাতায় যায়। এই অফিস, ওই অফিস ঘোরে। কিন্তু তাও কিছু করতে পারছে না! হাতের লক্ষ্মীকে পায়ে ঠেললে কি এমনটাই হয়? ইশ, তখন যদি চাকরিটা নিয়ে নিত!

ওদের বাবা মারা গেছে প্রায় ন' বছর হল। বাবা কাছের স্পিনিং মিলটায় চাকরি করত। কিন্তু বাবার পরে সেখানে চাকরি হয়নি মহীর। আর সত্যি বলতে কী, তখন ভাবত বক্সিং থেকেই ভাল কাজ পেয়ে যাবে ও। ভাবত ভারতের হয়ে অলিম্পিকে অংশ নেবে।

(ঘ)

'আই হেট অ্যালজাইমার! অ্যালজাইমার কী জিনিস জানেন?'

প্রশ্নটা আমার দিকে ছুঁড়ে দিয়ে বেশ কিছুক্ষণ নীরব হয়ে বসে রইলেন তরুণ বিজ্ঞানী সুগত সেন। তার তীব্রদৃষ্টি আমায় জরিপ করছিল। যেন শব্দটার গুরুত্ব বোঝাতে চাইছেন। আমি চুপ করে বসেছিলাম। ভদ্রলোক আঙুল তুলে নির্দেশ করেন।

'ওই দেখুন, অ্যালজাইমার।'

শব্দগুলো উচ্চারণ করেই তিনি বারান্দার দিকে তাকালেন। আমিও তাঁর দৃষ্টি অনুসরণ করে তাকাই। বারান্দায় আরামকেদারায় এক বয়স্ক ভদ্রলোক চুপ করে বসে আছেন। একমাথা সাদা চুল, পাকা গোঁফ-দাড়ি। কোনওদিকে হুঁশ নেই। শুধু চুপ করে সামনের দিকে তাকিয়ে থাকা ছাড়া যেন জগতে আর তাঁর কোনও কাজই নেই। একেবারে পুতুলের মতো স্থির!

'উনি আমার বাবা!' সুগত একটু থেমে বললেন, 'সারাদিন ওখানেই বসে থাকেন। খেতে গিলে খাল, নয়তো অভুক্তই থাকেন। চলতে ফিরতে ভুলে গেছেন। অবশ্য এখনও কথা বলেন। তবে আমার সঙ্গে নয়। মায়ের সঙ্গে ওঁর তো এ ও মনে নেই যে, মা বছরখানেক হল মারা গিয়েছেন!'

আমি কী বলব বুঝে পাই না। এমন পরিস্থিতির সামনে দাঁড়িয়ে কথা বলাও খুব কষ্টকর হয়ে দাঁড়ায়। শব্দগুলোরও বুঝি স্মৃতিভ্রংশ হয়ে যায়! বেশিরভাগ সময় একটাই স্বরবর্ণ এমন অবস্থায় সামাল দেয়। আমার মুখ থেকেও সেই অক্ষরটাই বেরোল- 'ও!'

'ডিমেনশিয়া' থেকে একটু একটু করে 'অ্যালজাইমার' দিকে চলে গেলেন। প্রথম প্রথমই কিন্তু সবকিছু ভুলতেন না শুধু সাম্প্রতিক ঘটনাগুলোই ভুলে যেতেন।' সুগত বিড়বিড় করে বললেন, 'পরে আর কিছুই মনে রইল না। শুনেছি, আমার ঠাকুরদারও এই রোগটা ছিল। ওঁকেও নিশ্চিহ্ন করে দিয়েছিল অ্যালজাইমার। বাবার মুখেই শুনেছি '

আমি একটু আন্তরিক স্বরেই বলি, 'বুঝতে পারছি।'

(ছ)

তারিখটা ছিল ১০ জুলাই ২০১৫, মুক্তি পেয়েছিল তেলুগু ছায়াছবি 'বাহুবলী: দ্য বিগিনিং'— এমন একটা ছবি যা উলটে দিয়েছিল সমস্ত হিসেব। বিশুদ্ধ আঞ্চলিক ছবি হিসেবেই থেমে থাকেনি 'বাহুবলী'। হিন্দি, মলয়লম ও তামিল, এই তিনটি ভাষায় ডাবিং করা হয়েছিল। ১৮০ কোটি বাজেটের এই ছবি বক্স অফিস আয় ছিল ৬৫০ কোটি টাকা! বলিউডের খানদের সমস্ত দাপাদাপি যেন দপ করে নিভে গিয়েছিল এই ছবি মুক্তির পরে। সেই ছবির নামেই ইঙ্গিত ছিল দ্বিতীয় ভাগের। শুধু ইঙ্গিত নয়, রীতিমতো প্রতীক্ষা করেছেন দর্শক এই দ্বিতীয় ভাগ অর্থাৎ 'বাহুবলী টু: দ্য কনক্লুশন' ছবিটির জন্য। সেই প্রতীক্ষার কারণ অবশ্য একটাই, প্রথম ছবি যে-প্রশ্নে শেষ হয়েছিল তার উত্তর, 'কাটাপ্পা কেন বাহুবলীকে হত্যা করেছিল?' অবশেষে দু'বছর পার করে মুক্তি পেল দ্বিতীয় ভাগ।

মোটের উপর এ ছবি রূপকথার ভর করা। রূপকথার ক্ষেত্রে একটি কথা প্রচলিত, সেখানে নাকি গল্পের গোরু গাছে ওঠে। কিন্তু এ ছবিতে জলের লৌকা আকাশে ওড়ে! তবু এই ছবি একঘেয়ে লাগে না। আসলে আমাদের বয়স যতই বাড়ুক না কেন, আমাদের অন্তরে শৈশব বোধহয় আমাদের ছেড়ে কখনওই যায় না। হলিউডের ভাবড় ভাবড় ওয়ার মুভিজ যেমন, 'ট্রয়', 'গ্লেডিয়েটর', '৩০০'-এর সঙ্গে 'বাহুবলী ২' ছবিটি তুলনীয়। কিন্তু কেবল রক্তক্ষয়ের ছবি এটি নয়। ভারতীয় ছবি, তাই ভারতের সংস্কৃতি এবং আবেগ এ ছবির পরতে পরতে। এমনকী, ছবির প্রথম ভাগের এক অংশে হাস্যরসের উপাদানও মজুত। তাই শুধুমাত্র শত্রু দমন নয়, প্রজা পালনের গল্পও বলে এ ছবি।

মাহিষ্মতীর সিংহাসনে আসীন হবেন অমরেন্দ্র বাহুবলী (প্রভাস) এই ঘোষণা করেন রাজমাতা শিবগামী (রাম্যাইয়া)। এরপর দেশ ভ্রমণে যান বাহুবলী । সেখানে কুন্তল রাজ্যের রাজকুমারী দেবসেনার (অনুষ্কা) সঙ্গে দেখা হয় তাঁর। দু'জনেই একে অপরের প্রেমে আবদ্ধ হন। কিন্তু শিবগামীর নিজের পুত্র বল্লালদেব (রানা) দেবসেনার তৈলচিত্র দেখে তাঁর প্রতি আকৃষ্ট হন। এর পর শুরু হয় নানা দ্বন্দ্ব । ঘাত প্রতিঘাতের মধ্যে খুন হতে হয় বাহুবলীকে । তার ছেলে মহেন্দ্র বাহুবলী ওরফে শিবা তার পিতার খুনের প্রতিশোধ নিতে আক্রমণ করে বল্লালদেবের সেনার উপর।

সোজা কথায় প্রতিশোধের গল্প। এই ছবির গল্পের ধাঁচা কেমন হবে তা দর্শক আগেই জানতেন। কিন্তু চিত্রনাট্যের গুণে তা আকর্ষক হয়ে উঠেছে।

এ ছবি দেখে প্রথমেই যেটা মনে হয় তা হল, বলিউড অর্থাৎ বিশ্বের কাছে ভারতীয় সিনেমার আঁতুড়ঘর, সেখানেও তো অনেক বিগ বাজেট ছবি নির্মিত হয়। তবু যে-ম্যাগনাম ওপাস রাজামৌলি উপহার দিলেন, তা কেন পাওয়া যায় না সেখানে? এ ছবির প্রধান অঙ্গ স্পেশ্যাল এফেক্টস, যুদ্ধের দৃশ্যে লাল যন্ত্র ও অস্ত্রের ব্যবহার সত্যিই তারিফযোগ্য। এই সিরিজের প্রথম ছবিটি ৬৩তম জাতীয় চলচ্চিত্র পুরস্কারে সেরা ছবি এবং সেরা স্পেশ্যাল এফেক্টস-এর জন্য সম্মানীত হয়েছিল। কিন্তু দ্বিতীয় ছবিটির টেকনিক্যাল দিক যেন আগের ছবিটিকেও টেক্কা দেওয়ার ক্ষমতাধারী। প্রভাস, অনুষ্কা, রানা ও রামাইয়া সকলেই তাঁদের সেরাটা এ ছবির জন্য উজাড় করে দিয়েছেন। তবে আলাদা করে যাঁর কথা না বললে এই চিত্রসমালোচনা অসম্পূর্ণ থেকে যায় তা হল এ ছবির হিন্দি ভার্শনে মনোজ মুন্তাশিরের সংলাপ ও গীতরচনা। যুদ্ধের দৃশ্য ও সংলাপ, দুই মিলে তৈরি হয়েছে ছবির 'গ্র্যান্ডজার'।

পরিশেষে বলতে হয়, সমকালীন সময় যখন মেয়েদের সম্মানহানি একটি চর্চিত বিষয়, সেখানে নেত্রীকে উচিত শাস্তি কীভাবে দেওয়া উচিত তা এ ছবিতে শিখিয়েছেন পরিচালক। সত্যিই যদি এই ছবি দেখে দেশের আইনকর্তারা দোষীদের ওইভাবে শাস্তির কথা একবারের জন্যও ভেবে থাকেন তা হলে বোধহয় মন্দ হয় না!

(ঙ)

প্রেফ ওর বাড়ির ব্যাকইয়ার্ড পেরিয়েও যাওয়া যেত। কারণ, বাড়ির পিছনের লনটি গাছারা দিচ্ছে তিনটি চিরহরিৎ গাছ। তার ওধারেই জঙ্গল শুরু। কাঠের বেড়া নাকি ইচ্ছে করেই দেয়নি ও। তাতে একটা বিচ্ছিন্নতা গড়ে ওঠে। কুড়ি বছরের প্রবাসী মন হয়তো বিচ্ছিন্নতা নিয়ে একটু বেশিই স্পর্শকাতর। তবে এই ব্যবস্থায় মনে হচ্ছে, অরণ্যই যেন আগলে রেখেছে বাড়িটাকে।

রাস্তাকে বিদায় দিয়ে আমরা ঢুকে পড়ি 'জাসল ট্রেল'-এ। চারপাশে লম্বা লম্বা গাছের ভিড়। বেশিরভাগই ওক। রুক্ষ আর বিবর্ণ কাণ্ডের ধূসর রঙে চারপাশটা একটু একঘেয়ে। পাতা নেই, ফুল নেই। শুধু খোঁচা খোঁচা শাখাপ্রশাখা আকাশের দিকে তাকিয়ে। ওলন্দিভেই নয়, আমেরিকায় বসন্তের প্রথমে এই সময়টায় প্রথমে ফোটে চেরিব্লসম। তারপরে ড্যাফোডিল। একে একে অন্যেরা। শীতের পাতাঝরা রুক্ষতা ঘুচিয়ে মুকুল আসে। বুঝতে পারি, এই জঙ্গলে এখনও সেই সুদিন আসেনি। ওয়াশিংটন থেকে ফেরার পথে রাস্তার দু'পাশে দেখেছিলাম এমনই বলাকল। মনে হচ্ছিল কোন অজানা হাহাকারে পুড়ে খাক হয়ে যাওয়া পরিত্যক্ত ভূমি।

হাঁটতে হাঁটতে হঠাৎ দেখা হল এক শেয়ালের সঙ্গে। ভিলি অবশ্য আমাদের দেখে চমকে উল্টোদিকে দৌড় দিলেন। কিছুদূর এগিয়ে আবিষ্কার করা গেল তার গর্তটিও। কিন্তু এসব তো ইতিহাস নয়। ভূগোল আর জীবনবিজ্ঞান। ইতিহাসও এল। এর কিছু পরেই। একটি ছোট্ট নালা পেরিয়ে যেখানে আমরা উঠলাম সেটার নাম 'ওকলে কেবিন'। এককালে ক্রীতদাসদের বাসস্থান। কীভাবে যেন আজও টিকে গিয়েছে। তাই 'লিভিং মিউজিয়াম'।

সবরকম বাহুল্যবর্জিত একটা ঘর। লেহাভই সাদাসাটা। ওক আর চেস্টনাটের গুঁড়ি আর ছোটবড় পাথর দিয়ে বানানো। দু'টি ঘর, গোটা চারেক জানলা। ঘরের সঙ্গে লাগোয়া একটা সিঁড়ি।

ইতিহাস বলছে, ১৯৭৫ সাল পর্যন্ত এই বাড়িতে লোকজন বসবাস করেছে। কিন্তু একসময় এটাই ছিল ক্রীতদাসদের থাকার ঘর। সেটা দেখে খুব ভাল লাগল, এই একখণ্ড ইতিহাসকেও ধরে রাখার কী সুন্দর প্রয়াস! সামনে একটি বোর্ডে এ বাড়ির ইতিহাস, মালিকানা বদল থেকে শুরু করে এলাকার সংক্ষিপ্ত ইতিহাসও সুন্দর করে লেখা। একঝলক কেউ পড়লেই তাঁর একটা স্পষ্ট ধারণা হবে এই সামান্য আয়গার গুরুত্ব সম্পর্কে।

এই কেবিন হাতবদলের পরম্পরাটা খুব ছোট নয়। ১৮২০ খ্রিস্টাব্দ নাগাদ তৈরি হয় ওকলে কেবিন। ওকলে ফার্মের অঙ্গ হিসাবেই। সেইসময় বিশাল খামার এবং কেবিনের মালিক ছিলেন রিচার্ড বি ডোরসে। ইনি উত্তরাধিকার সূত্রে এসবের মালিকানা পান। তাঁর দাদু কর্নেল রিচার্ড ক্রক ছিলেন বিপ্লবী আমেরিকার স্বাধীনতার যুদ্ধের ইতিহাসে 'ফাইটিং কোয়েকারস'দের একজন। ক্রীতদাস প্রথা উচ্ছেদে এই কোয়েকারদের ভূমিকা আমেরিকার মানুষ আজও স্মরণ করে।

রিচার্ড ক্রকের বাবা জেমস ১৭৬৭ সালে এই জায়গাটার পত্তন করেন। ১৮৩৬ সালে ডোরসে এক ধনী চিকিৎসক উইলিয়াম বাওয়ি ম্যাকগ্রুডারকে ৩০৮ একরের এই খামার বিক্রি করে দেন। পরবর্তীকালে, ১৮৬০ সালের জনগণনায় দেখা যাচ্ছে ম্যাকগ্রুডারের কাছে ৩০ জন ক্রীতদাস এবং দু'টি কেবিন ছিল। যার একটি এই ওকলে কেবিন।

এই অঞ্চলে তখন ভুট্টা, সরষিন প্রভৃতির চাষ হত। এখনও কিছু কৃষি জমি রয়ে গিয়েছে। সভ্যতা একটু একটু করে তা গ্রাস করেছে। তবে এখানে সেই আগ্রাসনকে অন্তত বিপজ্জনকভাবে বলা যাবে না। দিব্যি সাজিয়েগুছিয়ে রাখায় চেষ্টায় ঘাটতি নেই। জঙ্গলকে জঙ্গলের মতোই রাখার চেষ্টা রয়েছে। আর তার মধ্যে একটিলতে এই কেবিনের যে নিঃসঙ্গতা, সেটাও মানুষকে নিমেষে হারিয়ে যাওয়া দিনগুলোতে নিয়ে যাবে।

(ঝ)

২০১৪ সালে গোটা পৃথিবীতে ম্যালেরিয়ার বলি হয়েছে ৫৮০,০০০ জন মানুষ। এ রোগের হাত থেকে বাঁচার জন্য নানা পথ খুঁজে দেখা হচ্ছে। ম্যালেরিয়ার জীবাণু বহন করে মশা। সুতরাং ম্যালেরিয়ায় দাঁড়ি টানতে গেলে মশার সংখ্যা কমানো দরকার। অন্তত মশার কামড় থেকে বাঁচা দরকার। সাধারণ মশারি, ওষুধ মাখানো মশারি (আফ্রিকার সাহারা-সন্নিহিত অঞ্চলে এর ব্যবহার চালু হয়েছে বেশ কিছুদিন হল), মশা-নিবারক রাসায়নিক, ধূপ— এগুলো ব্যবহার করেও ফল যে তেমন কিছু হচ্ছে না, তার প্রমাণ ওপরে লেখা মৃতের সংখ্যা। শক্তিশালী বিকিরণের সাহায্যে মশার প্রজনন ক্ষমতা নষ্ট করে তাদের প্রকৃতিতে ছেড়ে দেওয়ার কথাও উঠেছে। এতে মশার সংখ্যা কমবে এমন আশা করা হচ্ছে। মশার শরীরে এমন জিন ঢুকিয়ে দেওয়ার উদ্যোগ নেওয়া হচ্ছে, যাতে কেবল পুরুষ মশারাই বেঁচে থাকে, মারা যায় স্ত্রী মশা। জননীর সংখ্যা কমলে মশার বংশবৃদ্ধি স্তিমিত হয়ে আসবে, এমনটাই ভাবা হচ্ছে।

কোনও ম্যালেরিয়া আক্রান্ত মানুষকে মশা কামড়ালে তার শরীরে সেই জীবাণু প্রবেশ করে। মশার শরীরে জীবাণুটি তার জীবনচক্রের এক ভাগ পেরয়, তারপর সেই মশা কের কোনও সুস্থ মানুষকে কামড়ালে জীবাণুটা নতুন এক শরীর পায় বংশবিস্তারের জন্য। সম্প্রতি একদল বিজ্ঞানী ম্যালেরিয়া বাহক অ্যানোফিলিস স্টিফেনসাই (ঘবিতে) মশার জিনের ভেতর এমন বদল ঘটানোর উদ্যোগ নিয়েছেন, যাতে তার শরীরটি আর ম্যালিগন্যান্ট ম্যালেরিয়ার জীবাণু, প্লাসমোডিয়াম ফ্যালসিপ্যারাম প্রতিপালনের অনুকূল না থাকে। অর্থাত্ মশা ম্যালেরিয়ার রোগীকে কামড়ালেও তার শরীর থেকে আর অন্য কারও শরীরে জীবাণু সংক্রমণের আশঙ্কা থাকবে না। অ্যানোফিলিস স্টিফেনসাই মশাটি ভারতে মোট ম্যালেরিয়া আক্রমণের অন্তত ১২ শতাংশের জন্য দায়ী। আমেরিকার ক্যালিফোর্নিয়া বিশ্ববিদ্যালয়ের বিজ্ঞানী ভ্যালেন্টিনো গ্যান্টজ্ ও তাঁর সহযোগী একদল বিজ্ঞানীর পরিকল্পনা হল, এরকম জিন-বদলানো মশা ঝাঁকে ঝাঁকে তৈরি করে প্রকৃতিতে ছেড়ে দেওয়া হবে। এদের থেকে মশার যে-বংশধারা শুরু হবে তা বহন করবে ওই বিশেষ জিনটি। পরিণতি: ওই জিনের অধিকারী মশাদের শরীর কাজে লাগিয়ে জীবাণুটি আর ঘুরিয়ে পড়তে পারবে না, ম্যালেরিয়ায় লাগাম পরানো সম্ভব হবে। তবে এভাবে ম্যালেরিয়াকে সম্পূর্ণ নির্মূল করা নিশ্চয় সম্ভব নয়, তবে অন্যান্য ব্যবস্থার সঙ্গে নিলে এই উদ্যোগও যথেষ্ট গুরুত্বপূর্ণ ভূমিকা নিতে পারে, প্রসিডিংস অফ ন্যাশনাল অ্যাকাডেমি অফ সায়েন্স গবেষণাপত্রে প্রকাশিত এঁদের গবেষণাপত্রে এঁরা জানিয়েছেন।

2. निम्नलिखित का बांग्ला में अनुवाद कीजिए। 20

(क)

सेठ पुरुषोत्तमदास पूना की सरस्वती पाठशाला का मुआयना करने के बाद बाहर निकले तो एक लड़की ने दौड़कर उनका दामन पकड़ लिया। सेठ जी रुक गये और मुहब्बत से उसकी तरफ देखकर पूछा—क्या नाम है?

लड़की ने जवाब दिया—रोहिणी।

सेठ जी ने उसे गोद में उठा लिया और बोले—तुम्हें कुछ इनाम मिला?

लड़की ने उनकी तरफ बच्चों जैसी गंभीरता से देखकर कहा—तुम चले जाते हो, मुझे रोना आता है, मुझे भी साथ लेते चलो।

सेठजी ने हँसकर कहा—मुझे बड़ी दूर जाना है, तुम कैसे चालोगी?

रोहिणी ने प्यार से उनकी गर्दन में हाथ डाल दिये और बोली—जहाँ तुम जाओगे वहीं मैं भी चलूँगी। मैं तुम्हारी बेटी हूँगी।

मदरसे के अफसर ने आगे बढ़कर कहा—इसका बाप साल भर हुआ नही रहा। माँ कपड़े सीती है, बड़ी मुश्किल से गुजर होती है।

सेठ जी के स्वभाव में करुणा बहुत थी। यह सुनकर उनकी आँखें भर आयीं। उस भोली प्रार्थना में वह दर्द था जो पत्थर-से दिल को पिघला सकता है। बेकसी और यतीमी को इससे ज्यादा दर्दनाक ढंग से जाहिर करना नामुमकिन था। उन्होंने सोचा—इस नन्हें-से दिल में न जाने क्या अरमान होंगे। और लड़कियाँ अपने खिलौने दिखाकर कहती होंगी, यह मेरे बाप ने दिया है। वह अपने बाप के साथ मदरसे आती होंगी, उसके साथ मेलों में जाती होंगी और उनकी दिलचस्पियों का जिक्र करती होंगी। यह सब बातें सुन-सुनकर इस भोली लड़की को भी ख्वाहिश होती होगी कि मेरे बाप होता। माँ की मुहब्बत में गहराई और आत्मिकता होती है जिसे बच्चे समझ नहीं सकते। बाप की मुहब्बत में खुशी और चाव होता है जिसे बच्चे खूब समझते हैं।

सेठ जी ने रोहिणी को प्यार से गले लगा लिया और बोले—अच्छा, मैं तुम्हें अपनी बेटी बनाऊँगा। लेकिन खूब जी लगाकर पढ़ना। अब छुट्टी का वक्त आ गया है, मेरे साथ आओ, तुम्हारे घर पहुँचा दूँ।

यह कहकर उन्होंने रोहिणी को अपनी मोटरकार में बिठा लिया। रोहिणी ने बड़े इत्मीनान और गर्व से अपनी सहेलियों की तरफ देखा। उसकी बड़ी-बड़ी आँखें खुशी से चमक रही थीं और चेहरा चाँदनी रात की तरह खिला हुआ था।

सेठ ने रोहिणी को बाजार की खूब सैर करायी और कुछ उसकी पसन्द से, कुछ अपनी पसन्द से बहुत-सी चीजें खरीदीं, यहाँ तक कि रोहिणी बातें करते-करते कुछ थक-सी गयी और खामोश हो गई। उसने इतनी चीजें देखीं और इतनी बातें सुनीं कि उसका जी भर गया। शाम होते-होते रोहिणी के घर पहुँचे और मोटरकार से उतरकर रोहिणी को अब कुछ आराम मिला। दरवाजा बन्द था। उसकी माँ किसी ग्राहक के घर कपड़े देने गयी थी। रोहिणी ने अपने तोहफों को उलटना-पलटना शुरू किया—खूबसूरत रबड़ के खिलौने, चीनी की गुड़िया जरा दबाने से चूँ-चूँ करने लगतीं और रोहिणी यह प्यारा संगीत सुनकर फूली न समाती थी। रेशमी कपड़े और रंग-बिरंगी साड़ियों की कई बण्डल थे लेकिन मखमली बूटे की गुलकारियों ने उसे खूब लुभाया था। उसे उन चीजों के पाने की जितनी खुशी थी, उससे ज्यादा उन्हें अपनी सहेलियों को दिखाने की बेचैनी थी। सुन्दरी के जूते अच्छे सही लेकिन उनमें ऐसे फूल कहाँ हैं। ऐसी गुड़िया उसने कभी देखी भी न होंगी। इन खयालों से उसके दिल में उमंग भर आयी और वह अपनी मोहिनी आवाज में एक गीत गाने लगी। सेठ जी दरवाजे पर खड़े इस पवित्र दृश्य का हार्दिक आनन्द उठा रहे थे। इतने में रोहिणी की माँ रुक्मिणी कपड़ों की एक पोटली लिये हुए आती दिखायी दी। रोहिणी ने खुशी से पागल होकर एक छलाँग भरी और उसके पैरों से लिपट गयी। रुक्मिणी का चेहरा पीला था, आँखों में हसरत और बेकसी छिपी हुई थी, गुप्त चिंता का सजीव चित्र मालूम होती थी, जिसके लिए जिंदगी में कोई सहारा नहीं।

मगर रोहिणी को जब उसने गोद में उठाकर प्यार से चूमा तो जरा देर के लिए उसकी आँखों में उम्मीद और जिंदगी की झलक दिखायी दी। मुरझाया हुआ फूल खिल गया। बोली—आज तू इतनी देर तक कहाँ रही, मैं तुझे ढूँढने पाठशाला गयी थी।

रोहिणी ने हुमककर कहा—मैं मोटरकार पर बैठकर बाजार गयी थी। वहाँ से बहुत अच्छी-अच्छी चीजें लायी हूँ। वह देखो कौन खड़ा है?

माँ ने सेठ जी की तरफ ताका और लजाकर सिर झुका लिया।

(ख)

कार्निवल के मैदान में बिजली जगमगा रही थी। हंसी और विनोद का कलनाद गूंज रहा था। मैं खड़ा था उस छोटे फुहारे के पास, जहां एक लड़का चुपचाप शराब पीने वालों को देख रहा था। उसके गले में फटे कुरते के ऊपर से एक मोटी-सी सूत की रस्सी पड़ी थी और जेब में

कुछ ताश के पत्ते थे। उसके मुंह पर गंभीर विषाद के साथ धैर्य की रेखा थी। मैं उसकी ओर न जाने क्यों आकर्षित हुआ। उसके अभाव में भी सम्पन्नता थी।

मैंने पूछा, "क्यों जी, तुमने इसमें क्या देखा?"

"मैंने सब देखा है। यहां चूड़ी फेंकते हैं। खिलौनों पर निशाना लगाते हैं। तीर से नम्बर छेदते हैं। मुझे तो खिलौनों पर निशाना लगाना अच्छा मालूम हुआ। जादूगर तो बिलकुल निकम्मा है। उससे अच्छा तो ताश का खेल मैं ही दिखा सकता हूं।" उसने बड़ी प्रगल्भता से कहा। उसकी वाणी में कहीं रुकावट न थी?

मैंने पूछा, "और उस परदे में क्या है? वहां तुम गए थे?"

"नहीं, वहां मैं नहीं जा सका। टिकट लगता है।"

मैंने कहा, "तो चल, मैं वहां पर तुमको लिवा चलूं।" मैंने मन-ही-मन कहा, "भाई! आज के तुम्हीं मित्र रहे।"

उसने कहा, "वहां जाकर क्या कीजिएगा? चलिए, निशाना लगाया जाए।"

मैंने उससे सहमत होकर कहा, "तो फिर चलो, पहले शरबत पी लिया जाए।" उसने स्वीकार-सूचक सिर हिला दिया।

मनुष्यों की भीड़ से जाड़े की संध्या भी वहाँ गर्म हो रही थी। हम दोनों शरबत पीकर निशाना लगाने चले। राह में ही उससे पूछा, "तुम्हारे घर में और कौन है?"

"मां और बाबूजी।"

"उन्होंने तुमको यहां आने के लिए मना नहीं किया?"

"बाबूजी जेल में हैं।"

"क्यों?"

"देश के लिए।" वह गर्व से बोला।

"और तुम्हारी माँ?"

"वह बीमार है।"

"और तुम तमाशा देख रहे हो?"

उसके मुँह पर तिरस्कार की हंसी फूट पड़ी। उसने कहा, "तमाशा देखने नहीं, दिखाने निकला हूं। कुछ पैसे ले जाऊँगा, तो माँ को पथ्य दूँगा। मुझे शरबत न पिलाकर आपने मेरा खेल देखकर मुझे कुछ दे दिया होता, तो मुझे अधिक प्रसन्नता होती!"

मैं आश्चर्य से उस तेरह-चौदह वर्ष के लड़के को देखने लगा।

"हां, मैं सच कहता हूं बाबूजी! मां जी बीमार हैं, इसीलिए मैं नहीं गया।"

"कहां?"

"जेल में! जब कुछ लोग खेल-तमाशा देखते ही हैं, तो मैं क्यों न दिखाकर मां की दवा करूं और अपना पेट भरूं।"

मैंने दीर्घ नि:श्वास लिया। चारों ओर बिजली के लट्टू नाच रहे थे। मन व्यग्र हो उठा। मैंने उससे कहा, "अच्छा चलो, निशाना लगाया जाए।"

हम दोनों उस जगह पर पहुंचे, जहां खिलौने को गेंद से गिराया जाता था। मैंने बारह टिकट खरीदकर उस लड़के को दिए।

वह निकला पक्का निशानेबाज। उसकी कोई गेंद खाली नहीं गयी। देखनेवाले दंग रह गए। उसने बारह खिलौनों को बटोर लिया, लेकिन उठाता कैसे? कुछ मेरी रूमाल में बंधे, कुछ जेब में रख लिए गए।

लड़के ने कहा, "बाबूजी, आपको तमाशा दिखाऊंगा। बाहर आइए, मैं चलता हूं।" वह नौ-दो ग्यारह हो गया। मैंने मन-ही-मन कहा, "इतनी जल्दी आंख बदल गई।"

मैं घूमकर पान की दुकान पर आ गया। पान खाकर बड़ी देर तक इधर-उधर टहलता देखता रहा। झूले के पास लोगों का ऊपर-नीचे आना देखने लगा। अकस्मात् किसी ने ऊपर के हिंडोले से पुकारा, "बाबूजी!"

मैंने पूछा, "कौन?"

"मैं हूँ छोटा जादूगर।"